अंतरा-शब्दशक्ति

खुद की तलाश में

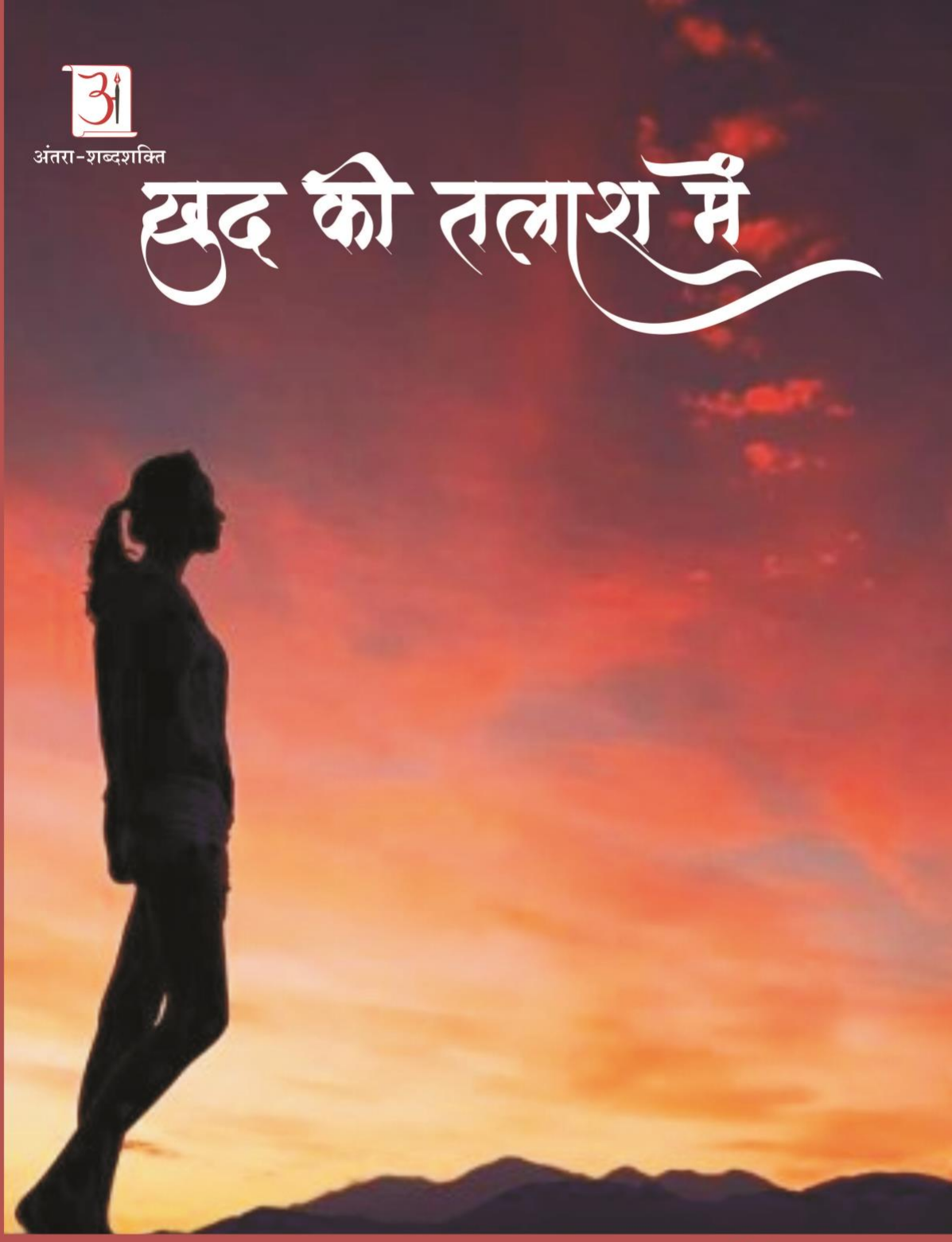

काव्य संग्रह

डॉ. वंदना गुप्ता

खुद की तलाश में

(काव्य संग्रह)

डॉ वन्दना गुप्ता

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-86666-22-2

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चैक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा- एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabdshkti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८- डॉ वन्दना गुप्ता

मूल्य - ५५.०० रुपये

आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Khud ki talash men by Dr. Vandana Gupta

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

मेरी कलम से...

मैं गणित जैसे दुरूह विषय की विद्यार्थी एवं प्राध्यापिका रही हूँ। अंकों में उलझते हुए भी शब्दों से खेलते हुए सुकून की तलाश हमेशा रही है। लेखन, खालीपन में शौक के रूप में और किसी की पीड़ा से व्यथित हो मजबूरी के रूप में उभरा है। बचपन से ही मनोभावों को डायरी के पन्नों में छुपाने की आदत रही है। प्रकृति से राग और अपनों से अनुराग के कुछ पल, मानवीय संवेदनाओं में डूबा मन कभी खुश होता, कभी उदास.. कभी प्रेम में डूबा तो कभी अलगाव की पीड़ा से बेचैन.. जिंदगी के कई पहलुओं को नजदीक से जाना तो कुछ आज तक अनछुए ही रहे..

मेरे पिताजी स्व. सतीशचन्द्र गुप्ता भी साहित्यकार रहे हैं, शायद इसीलिए लेखकीय गुण विरासत में मिला है। मेरी पुरानी डायरी मेरे प्रोफेसर पति डॉ वीरेंद्र गुप्ता ने पढ़ी और उनकी प्रेरणा से ये काव्य संग्रह प्रकाशित करने का विचार आया। मेरी बेटियाँ डॉ शिल्पा-वरुण कोठारी और डॉ शैली गुप्ता तथा बेटे इंजी. अंशुल गुप्ता ने सतत प्रेरित किया और परिणाम स्वरूप यह काव्य संग्रह 'खुद की तलाश में' आपके सामने है। मैं अपने प्रयास में कितनी सफल रही हूँ ये आप सुधीजनों की प्रतिक्रिया से ही जान पाऊँगी। ईश्वर को धन्यवाद के साथ मेरी प्रथम कृति मेरी प्रेरणास्त्रोत मेरी माता स्व.श्रीमती विमला गुप्ता को श्रद्धाजंलि स्वरूप सादर समर्पित है। आप सभी के स्नेह की आकांक्षा है....

डॉ वन्दना गुप्ता

अनुक्रमणिका

1.	अभिव्यक्ति	7
2.	अभीप्सा	8
3.	नसीहत	9
4.	काश!	10
5.	जिंदगी-एक संघर्ष	11
6.	स्मृतियां	12
7.	शून्य से अनन्त तक	13
8.	दर्द	14
9.	सावन	15
10.	हमारी अधूरी कहानी	16
11.	तेरे जाने के बाद	17
12.	यादों की बारिश	18
13.	झूठ	19
14.	उड़ान	20
15.	यादों के बिम्ब	21
16.	एक प्रश्न	22
17.	माँ की याद में	23
18.	विवशता	24
19.	शायद	26

20. वजूद 28
21. समय 30
22. अमूर्त 30
23. प्रतीक 31
24. एक टुकड़ा जीवन 31
25. प्रेम-झूला 32

अभिव्यक्ति

मन की अंगनाई में
सोच की दीवार से
लगकर गम बैठे रहते हैं
और मैं...
गम से उपजे दर्द को
बाहर उकेरने के लिए
बेताब रहती हूँ
किन्तु...
मन का दरवाजा
बाहर नहीं खुलता
और दर्द अंदर रह जाता है
भीतर ही भीतर
रौंदता है
मन की कोमल धरती को
अपने क्रूर वैचारिक पंजों से
और फिर...
लहू रिसता है
स्याही के रूप में
जिसे...
डायरी के पन्ने सोख लेते हैं...!!

अभीप्सा

नदी किनारे की रेत को
मुठ्ठी में लेकर
शत शत नमन
उस जलधारा को
जिसने अपने अथक प्रयास से
तोड़कर चट्टान को
ला दिया इस रूप में...
उस जलधारा को छूकर
दोस्ती की मैंने उससे
शुभकामनाएँ दी मैंने उसे
आगे.. और आगे..
अनजाने पथ पर
सतत बहते रहने के लिए..
और...
खुश होकर मैंने सोचा..
कि
मैं चाहूँ तो
पंछियों की तरह
मुक्त आकाश की ऊंचाई नाप सकती हूँ,
घने जंगल में हिरन के छौने की तरह
कुलांचे भर सकती हूँ
और...
पत्थर की तरह
निर्जीव पड़े रहने से
बच सकती हूँ.....
अगर मैं चाहूँ तो..!!!!

नसीहत

जिंदगी की तवील राहों में
कई रहगुजर मिलेंगे..
हादसे तो आएंगे
और...
मौसम के साथ
गुजर जाएंगे..
किन्तु...
हमें दृढ़ रहना है,
उस वृक्ष की मानिंद
जिस पर...
आता है बसन्त
हर पतझड़ के बाद..
करनी हैं अंकुरित
नए संकल्पों की कोंपल
हृदय से..
पत्तियों के झड़
जाने के बाद भी,
और....
अपनी जड़ें मिट्टी में गहरी
और गहरी..
उतारनी है
क्योंकि..
उखड़ते वही हैं
जो
अपनी जमीन छोड़ देते हैं..!!

काश!

यूँ ही साथ चलते-चलते
एक दिन तुमने कहा..
रुको..!
पर मैं चलती रही..
तुमने कहा..
चलो..!
और मैं रुक गयी..
तुमने इसे अपनी अवहेलना समझा,
और तुम नाराज हो गए..
काश..! तुम समझ पाते
कि..
यह तिरस्कार नहीं था तुम्हारे प्रति,
यह तो तुम्हारी नजर में
खुद की अहमियत,
खुद की इच्छा,
और खुद का वजूद,
साबित करने का
एक प्रयास था मेरा...
काश..! तुम समझ पाते..
बस तुमने एक बार
सिर्फ एक बार कहा होता
कि..
"जो तुम चाहो.."
फिर शायद..
शिकायत का मौका नहीं मिलता
कभी भी..कहीं भी..और किसी को भी..

जिंदगी-एक संघर्ष

गहराता हुआ सन्नाटा
कुछ मुझसे कह रहा है,
चुप रहो,
मुझे सन्नाटे का शोर सुनने दो।
चारों तरफ छाए हैं
धुंधलाते स्याह बादल,
मन में भी गीत न गुनगुनाओ
मुझे चुप रहने दो।
नींद से बोझिल
हुई जाती हैं आज आँखे,
पलक बंद कर लो,
कुछ ख्वाब बुनने दो।
सामने से मेरे ये आईना हटा लो,
प्रतिबिम्ब से नहीं,
मुझे खुद से बात करने दो।
मरते मरते आदमी,
खुद से न हार जाए कहीं,
मुझे जिंदगी के प्रतिमान बदलने दो।
आखिरी सांस तक,
आखरी आस तक,
मैं यही कहूँगी,
मौत से नहीं,
मुझे जिन्दगी से लड़ने दो..
मुझे जिंदगी से लड़ने दो।।

स्मृतियां

कभी कभी
ऐसा क्यूँ होता है
कि...
हमारे अनजाने
अनचाहे ही
मन के ये कोमल तन्तु
किसी से जुड़ जाते हैं
बहुत गहरे तक..
किसी की बातें
मन के अन्तस में गहरे पैठ जाती हैं
स्नेह, आस्था और विश्वास की
एक डोर बन्ध जाती है
मन के एक कगार से
दूसरे कगार तक,..
और...
हमें इसका अहसास ही नहीं होता
एक लंबे अरसे तक
किन्तु
जब समय के एक निर्मम थपेड़े से
ये तार अचानक ही टूट जाते हैं
उस पल मन में बनी गाँठ
कभी नहीं घुल पाती
और..
बीती बातों को
हम सहेज लेते हैं
यादों की एल्बम में
अतीत के पन्नों पर
कभी न भूलने के लिए..!

शून्य से अनन्त तक

तुमसे मिलने के पहले,
मैं शून्य थी
तुम भी शून्य थे
दो शून्य मिलकरभी शून्य ही रहे...
निश्छल और बेपरवाह से
सपनों का शून्य...
पूर्वाह्न का शून्य....!
तुमसे मिलने के बाद,
और
बिछ़डने के पहले,
शून्य को जिया मैंने,
बखूबी जिया मैंने...
प्यार और परवाह का
जुनून सपनों को जीने का...
अपराह्न का शून्य....!
तुमसे बिछ़डने के बाद,
मैं फिर से शून्य होना चाहती हूँ
तुम भी शायद शून्य ही हो गए...
भावनाओं, टूटे सपनों और कुचले अरमानों का...
सांध्य का शून्य....!
जिंदगी का सफर...
शून्य से शून्य तक...
या
अनन्त से अनन्त तक...
अन्त में सब शून्य ही है..!

दर्द

सूरज के उगने के साथ ही
सोच की अंगनाई में
उभरते हैं कई दर्द
जिनकी न शक्ल होती है
न ही कोई आवाज़
जिन्हें सिर्फ महसूसा जा सकता है
सूरज तो रोज उगता है
और अस्त हो जाता है
पर अस्त होते सूरज के साथ
दर्द दफन नहीं हो जाता
यह तो मथता रहता है
मन को भीतर ही भीतर
और जब पीड़ा असहनीय हो जाती है
तब कोशिश करती हूँ
दर्द को शब्दों का जामा पहना
कलम की लाठी के सहारे
कागजी जमीन पर उतारने की
और
मन को खाली करती हूँ
एक बार फिर
दर्द से भरने के लिए..

सावन

सखियों संग
झूमता सा,..इतराता सा,..
मासूम सा बचपन पीछे छोड़...
पेड़ की डाली से झूला बांध
सपनों की लम्बी पींगे लेता ये
नटखट अल्हड़ सा यौवन...
सावन की
भीगी भीगी अगन में..
साजन से
मिलने को आतुर ये तन ओ मन...
और ...
ऋतु के रंग में रंगा
ये मेरा नन्हा सा मन
इस सब्ज रंग में सराबोर हो
भीगना चाहता है
पिया के रंग में
एक ऐसे रंग में
जो गहरा हो स्याह रंग से भी
और...
जिंदगी के तमाम रंग समेट..
सप्तरंगी इंद्रधनुष
पिया के मन में
एकाकार हो समा जाए
दिखायी दे सिर्फ और सिर्फ़
एक रंग प्यार का रंग...!

हमारी अधूरी कहानी

मैं,
एक सपनों की दुनिया में जीने वाली
खुश रहने और दूसरों को खुश देखने वाली लड़की...
तुम
एक सपने बुनने वाले और सपने दिखाने वाले
हमें मिलना ही था...
मैं,
एक सपनों को पूरा करने के लिए मचलती
दुनिया को अपनी नजर से देखने वाली लड़की...
तुम
सपनों को पूरा करने का हुनर सिखाने वाले
हमें साथ चलना ही था...
मैं
वही देखती जो दुनिया दिखाना चाहती
उसके परे न सोचती न समझती...
तुम
दुनिया का असली चेहरा समझाने वाले
हमें एक दूसरे को समझना ही था...

तुमने मुझे सिखाया पर्दे के पीछे की दुनिया देखना
इसी सीखने सिखाने में हम ये भूल गए कि..

दुनिया का असली चेहरा देखते सीखते
मैंने देख लिया तुम्हारा भी असली चेहरा

फिर ...
हमें बिछड़ना ही था....

तेरे जाने के बाद

यूँ तो जिंदगी मासूम सी, गुजर रही थी तेरे बगैर,
न तुझसे वाकिफ थी मैं, न तसव्वुर में तस्वीर थी!
तुझसे मिलना और फिर अनायास ही जुदा हो जाना..
वक़्त की ही शायद तदबीर या कोई साजिश सी थी!

ह्रदयभूमि से परिचय हुआ, अहसास दिल में उग गए;
कुछ लम्हें, कुछ यादें, कुछ सुकूँ और कुछ जज्बे..
उद्गार बन फूटे कहीं, कुछ दफन कहीं हो गए,
कुंठा से सिंचित हो ह्रदय, उर्वर से बंजर हो गया!

दिल में घुमड़ता ही रहा, बादलों के साथ कुछ,
बारिश जो होती आँसुओं की बह जाती व्यथा कोई!
मन के आकाश का सूनापन, विस्तृत होता जाता है,
इंद्रधनुष की तलाश में मौसम फिर बदल जाता है!

वक़्त का बदलना और गुजरना कोई नई बात नहीं,
तेरे लौट आने की फिर भी,छूटती क्यों आस नहीं!
यादें पीछे रह जाती हैं, अनुभव आगे बढ़ जाता है;
घबरा जाती हूँ जब कोई, दिल पर दस्तक दे जाता है!

यादों की बारिश

आज बादलों ने कहर बरसाया है,
कोई भुला हुआ फिर याद आया है!

यूँ तो हर मौसम का अंदाज़ ए बयां है जुदा,
जाने क्यूँ बारिशों ने हमें रुलाया है!

वो जो कहते थे, सदा साथ हैं तुम्हारे,
वक़्त ने उनके चेहरों से नकाब हटाया है!

हमने ही बनाए थे रेत पर सपनों के घरौंदे,
सागर को उफनना था, लहरों ने मिटाया है!

जाना था तुमसे दूर, पर लौटकर फिर,
यादों ने तुम्हारे दर पर ही सर टकराया है!

ख्वाबों और ख्वाहिशों की जंग है जारी,
जिंदगी तू ही बता, कौन सा कर्ज़ बकाया है!

झूठ

सच कड़वा होता है, झूठे ख्वाब लुभाते हैं!
इसीलिए हम अक्सर, ख्वाबों में जिये जाते हैं!!

चिकनी चुपड़ी बातों में, हम अक्सर आ जाते हैं!
हकीकत से हो सामना, तब बिखर ही जाते हैं.!!

स्वहित पहले आता है, सर्वहित भूल ही जाते हैं!
मुखौटे लगाकर सभी, अपनों से मिलने जाते हैं!!

कितना लिखा पढ़ा हो, सिर्फ अक्षर पढ़ने आते हैं!
भावों को जो पढ़ सकें, वही इंसान कहलाते हैं!!

वक़्त को जो न पहचाने, वो ही झूठे कहलाते हैं!
वक़्त की नब्ज जानकर, सच्चे वो कहलाते हैं!!

चेहरा मन का दर्पण है, फिर भी धोखा खाते हैं!
झूठ अक्सर सच का, लिबास पहनकर आते हैं!!

उड़ान

ये ख्यालों की दुनिया भी
कितनी अजीब होती है.
जब हम वास्तविक धरातल को
नीचे.. बहुत नीचे छोड़कर,
ऊपर उड़ते चले जाते हैं...
अपनी बाँहें पसारे
आसमान को मुट्ठी में बाँधना चाहते हैं,..
उस पल महसूस होता है
कि जैसे...
चतुर्दिक रंग बिरंगे गोले तैर रहे हैं
और...
रुई जैसे नर्म बादलों पर खड़
हम उन्हें देख रहे हैं.
ये सुंदर गोले
जो प्रतिरूप हैं हमारे सपनों के...
अतृप्त इच्छाओं के
हमारी मुट्ठी में बंधने को
बेताब, बेचैन से आसपास घूम रहे हैं,..
हम उन्हें पकड़ने को हाथ बढ़ाते हैं
वे मुट्ठी से फिसल
नीचे चले जाते हैं..
निगाह नीचे जाती है
और..
वास्तविकता की कठोर चट्टान नज़र आती है..
उस पल यह अहसास होता है
कि कुछ पाते ही
उसे खोने का दुःख कितना गहन होता है..!

यादों के बिम्ब

अस्त होते सूरज की लालिमा
सिमट आती है
तुम्हारे ललाट की बिंदिया में,
तुम्हारे चेहरे की
उदासी पिघल कर घुल जाती है
संध्या के धुंधलके में,
और यकायक ही
उदास हो जाता है सारा माहौल
ये ऊंचे दरख़्त,
ये रंग बिरंगे फूल,
हिम आच्छादित चोटियाँ,
गुंजन करते भँवरे,
चहकती तितलियाँ
कल कल करती नदियाँ,
सब पर तारी हो जाता है
उदासी का मनहूस पागलपन..
जिस पल तुम्हारी याद
मुझे एहसास दिलाती है
कि मैंने तुम्हें खो दिया है..!

एक प्रश्न

गहराते सन्नाटे में
सम्वादों की खामोशी में
भीड़ में अकेलापन महसूस किया है मैंने....
अंधेरे में कैद हो
रोशनी की चौखट पर
खड़ी परछाई का दीदार किया है मैंने...
नम होती आँखों में
मरे हुए सपनों की
जिंदा लाश को ढोते हुए सफर किया है मैंने...
मुट्ठी भर उदासी लिये
सुकूँ तलाशती आँखों में
एक पल की खुशी के लिए जीवन जिया है मैंने...
रिश्तों के खोखलेपन को
टटोलती बूढ़ी हथेलियों की
खुरदुरी दरारों का दर्द पहचान लिया है मैंने...
बौने होते शब्दों के
भावों की ऊँचाई को
अभिव्यक्ति की तलाश में पंगु किया है मैंने...
इसलिए मैं सोचती हूँ
जीवन का कठिन प्रश्न
मैं-कौन, क्या और क्यों? क्या कभी हल किया मैंने...???

माँ की याद में

माँ! तुमसे दूर होकर
तुम्हारे स्नेह की कीमत
मैंने जानी है,
जो अब तक तुमको
न पहचानी
वो मेरी नादानी है..!
मेरे लिए तुमने
कितना कुछ किया,
कितना कुछ सुना
और कितना कुछ सहा!
पर बदले में मैंने तुम्हें क्या दिया?
कभी चंद कड़वे लफ्ज़ भी मैंने कहे
पर तुमने हँसते हँसते सब सहे!
कभी रूठ गई मैं
और कभी बोलकर सताया,
पर तुमने हमेशा मुझे हँसकर मनाया!
आज जब तुम इस दुनिया में नहीं हो,
क्यों पिछली यादों पर से पर्दा उठाया,
हर भूला बिसरा पल
फिर से जगमगाया,
और मैंने अपने अन्तस में
तुम्हारे स्नेह का दीपक जलाया!!

विवशता

गहराते बादल
बरस पड़ने को आतुर,
ठण्डी चलती
पुरवाई,
और ऐसे में
मेरा
ये नन्हा
एकाकी मन,
कल्पना के
इंद्रधनुषी पंख लगाकर
उड़ जाता है
दूर...
गगनचुम्बी इमारतों
के ऊपर,
बादलों को
छूने..
बादलों पर सवार
मैं देखती हूँ,
पृथ्वी पर बारिश की
प्रतीक्षा करते लोग,
फुटपाथ पर अपनी
छोटी सी दुनिया

समेटते बदहवास
चिंतित लोग,
नुक्कड़ पर अपना
सामान समेटता
वह बूढ़ा खोमचे वाला
दिखाई पड़ता है मुझे,
और अपनी गद्दी पर
सिगार पीता वह मोटा सेठ भी,
उस बहुमंजिली इमारत की
एक बालकनी में
नाचते गाते,
पकौड़े खाते
लोग दिखाई देते हैं मुझे
और...
उसके पीछे की बस्ती में
फ़टे हुए टाट के लिए
झगड़ते लोग भी
दिख पड़ते हैं मुझे वहाँ से,
और तब...
मुझे बरस कर गिर जाने का डर नहीं,
वरन...
पृथ्वी से बाहर होने का दुख होता है...!!

शायद

मायके से बिदा होते हुए
माँ ने दी थी एक पोटली
पिता का प्यार था उसमें
माँ की ममता थी
और थे मेरे हौसलों के कतरे पंख...
पिता के हाथ कांप गए थे देते हुए
माँ की आवाज़ भर्रा गई थी कहते हुए
कि
बेटी.! ये तेरे कुछ अधूरे सपने हैं
अरमान हैं कुछ तेरे
जिन्हें परिवार और समाज की बेड़ियों
के कारण हम उड़ान नहीं दे सके
अपने नए जीवन में सम्भालना इन्हें !
पंख आँचल में थामे
ससुराल की देहरी को छुआ मैंने
यहाँ तो मैं बेटी से बहू बन कर आई थी
नियम, कायदे, सम्मान
और परिवार की इज्ज़त का पैमाना थी अब मैं
सिमट कर रह गए मेरे हौसलों के पंख
सहेज कर रख दिया सन्दूक के कोने में !
बेटी के जन्म लेते ही
मेरे सोये अरमान फिर जाग गए
सपनों ने अंगड़ाई ली और
चाहत भरी निगाहों से पंखों ने मुझे देखा
मैंने प्रयास किया
कि बेटी को उड़ने के लिए उसके
अरमानों के पंख दे सकूँ

पर...
बेटी को खुला आसमान देने की चाहत
मन में ही रह गई कुछ बेड़ियां टूटी
और कुछ बाकी रह गईं !
उसकी बिदा के समय
आशीर्वाद के साथ
एक पोटली थमा दी मैंने उसे
ले बेटा! ये हौसलों के पंख हैं
तेरे हिस्से के आसमान में
उड़ान भर सके तू
सिर्फ तेरे ही नहीं
मेरे पंख भी हैं
शायद तेरे काम आ सकें !
आज देखती हूँ उसे
उसके आसमान में उड़ते हुए
खुश होती हूँ और सोचती हूँ
कि काश!
माँ अपने पंखों को
कतरे जाने के बाद भी
हस्तांतरित कर दे अपनी बेटी को
तो शायद बेटियाँ भी उड़ान भर सकें
छू सकें उनके सपनों का आसमान !
माँ के पंख बेटी के काम आ सकें
फिर शायद अगली पीढ़ी में
न कतरे जाएं उसके पंख
और वह रंग भर सके उसके अरमानों का
उसके हिस्से के आसमान में...!

वजूद

समुद्र के किनारे
सूरज के नीचे
तपती रेत पर
नंगे पैर
निरुद्देश्य भटकना
हमेशा अकारण नहीं होता है..
उद्देश्यहीनता के पीछे भी
कभी कभी
एक सार्थक उद्देश्य होता है..
मैं कभी कभी यूँ ही भटकते भटकते
पहुँच जाती हूँ
दूर दूर और दूर...
अनंत समुद्र की ओर
असीमित आकाश के नीचे..
तपती रेत पैरों के नीचे
फिसलती जाती है
या रेत को रौंदकर
पैरों को जलाना अच्छा लगता है..
कभी कभी ऐसा ही होता है --
मेरे साथ तुम्हारे साथ या हम सबके साथ...
कि
हम स्वयं को कष्ट देकर भी
पाते हैं एक तृप्ति का अहसास...
प्रकृति के अनंत विस्तार में
समुद्र, सूरज, रेत, मैं और तुम
प्रकृति का एक हिस्सा हैं
सब जीते हैं, संघर्ष करते हैं
अपने-अपने अस्तित्व के लिए

पानी की एक नन्ही बूँद
कुछ नहीं है समुद्र के सापेक्ष
किन्तु..
रेगिस्तान में इसका महत्व
वही समझ सकता है
जिसने इसे महसूसा है
रेगिस्तान की तपती रेत पर
जल की एक नन्ही बूँद भी
जीने का सहारा बन सकती है
और विशाल समुद्र की अतल गहराइयों में
वही बूँद खो देती है अपना वजूद
इसीलिए कभी कभी
भीड़ से दूर
समुद्र के किनारे
सूरज के नीचे
तपती रेत पर
निरुद्देश्य भटक कर
मैं तलाशती हूँ अपना वजूद
सबब जीने का..
और इसीलिए
इस निरुद्देश्य भटकती यात्रा के पीछे भी
होता है एक उद्देश्य
एक सार्थक उद्देश्य
जो जिंदगी का कोई
अनछुआ अनबूझा अर्थ समझा जाता है....

समय

अतीत की यादें
भविष्य का इंतज़ार
इन्हीं में बीत जाता है
हमारा वर्तमान..
क्यों नहीं हम सारा इंतज़ार
सौंप देते अतीत को
और...
सारी यादें छोड़ दें
केवल भविष्य के लिए
और फिर...
वर्तमान का एक एक लम्हा जी लें
निरपेक्ष भाव से
बिना किसी याद के
बिना किसी इंतज़ार के...

अमूर्त

आकाश रीता है
क्योंकि...
वह झील के दर्पण पर विश्वास करता है।
जबकि...
झील में तैरती मछलियाँ जानती हैं
कि..बूढ़े सूरज ने
झील में कूदकर आत्महत्या नहीं की है..
इन मछलियों से मैंने सीखा है
विश्वास में पलने का सुख
और..
इंतज़ार कर रही हूँ
एक बार फिर सुबह होने का...

प्रतीक

समुद्र किनारे रेत पर
कई बार
तुम्हारा नाम लिखकर
मैंने सन्नाटे को
आकार दिया है..
और...
दूसरे ही पल
उसे
निराकार कर दिया है
रेत पर लिखे
तुम्हारे नाम को मिटाकर..!

एक टुकड़ा जीवन

मेरे मन प्राणों में रच बस गई है ज्यों कस्तूरी
इस घर आँगन की देहरी से जुड़ी
धुंधली गहरी उजली मैली
जैसी भी हों यादें पूरी..!
जाते जाते खट्टी मीठी ये सब यादें
मम्मी पप्पा भैया बहिना की सब बातें
बांध गाँठ में साथ लिए जाऊँगी..!
आधे सपने पूरे सपने
इस देहरी पर जिए सपने
इसी घर आँगन को सौंपकर
नए जीवनपथ पर नए सपनों का संसार बसाऊंगी...!

प्रेम-झूला

नैनों में पिया समाये, मन खाए हिचकोले,
सपनों की पींग बढ़ाए, झूले सा जीवन डोले!

बांकी चितवन देख कर, पिया बलिहारी जाए,
प्रीत की डोरी बांधकर, पींग कुछ तेज़ चलाए!

प्रेम का झूला जो चढ़े, चले गगन की ओर,
नाचे मन मयूर सम, देख बादल संग भोर!

प्रेम डोर जो बाँध ले, मिटे ह्रदय की पीर,
मनमीत का साथ ज्यों, मछली का संग नीर!

आकाश से ऊंचे सपने, सागर सी गहरी चाहतें,
पिया का जब साथ हो, जीवन चले हँसते गाते!

जीवन में सुख दुःख, झूले सा दोलन करे,
साथ पिया का हो जब, मनवा कबहुँ न डरे!!

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - डॉ. वन्दना गुप्ता

जन्म - 13 जनवरी 1964, उज्जैन (म.प्र.)

शिक्षा - एम.एस.सी., एम.फिल, पी.एच.डी. (गणित)

पता -(कार्यालय) - प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष
गणित विभाग, शास.कालिदास कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय
उज्जैन (म.प्र.)
-(निवास) - 22, निर्माण नगर, दशहरा मैदान, उज्जैन

मो. - 9827535043

ई मेल - drvg1964@gmail.com

सम्मान -1. शाजापुर महाविद्यालय में कार्यरत् रहने के दौरान बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' जयंती समारोह में मध्यप्रदेश साहित्य परिषद हेतु काव्य पाठ हेतु पुरस्कृत।
2. पिट्सबर्ग में ऑनलाइन प्रकाशित अंतर्राष्ट्रीय द्वैभाषिक पत्रिका सेतु द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय काव्य प्रतियोगिता 2016 में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-86666-22-2

मूल्य- 55/-